बेरूत घोषणापत्र "अधिकारों के लिए आस्था"

"पृथ्वी पर जितने लोग हैं, ईश्वर तक पहुंचने के उतने ही रास्ते हैं।" (रूमी)[i]

1. हम, मानवाधिकार के क्षेत्र में काम करने वाले आस्था-आधारित और नागरिक समाज के कार्यकर्ता और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त (ओएचसीएचआर)[ii] के कार्यालय द्वारा शुरू की गई बैठकों के एक प्रक्षेपवक्र के समापन पर 28-29 मार्च 2017 को बेरूत में एकत्र हुए, अपनी गहरी धारणा व्यक्त करते हैं कि हमारे संबंधित धर्म और विश्वास सभी मनुष्यों **की गरिमा और समान मूल्य को बनाए रखने के लिए एक सामान्य प्रतिबद्धता साझा करते हैं**। इसलिए साझा मानवीय मूल्य और समान गरिमा हमारी संस्कृतियों की सामान्य जड़ें हैं। आस्था और अधिकार परस्पर सुदृढ़ क्षेत्र होने चाहिए। धर्मों या विश्वासों की व्यक्तिगत और सामुदायिक अभिव्यक्ति ऐसे वातावरण में पनपती और फलती-फूलती है, जहाँS सभी व्यक्तियों के समान मूल्य पर आधारित मानवाधिकारों की रक्षा की जाती है। वैसे ही, धर्म या विश्वासों द्वारा प्रदान की गई गहरी नैतिक और आध्यात्मिक नींव से मानवाधिकारों को लाभ हो सकता है।
2. हम अपने-अपने धार्मिक या आस्था संबंधी विश्वासों को **अदेय मानवीय अधिकारों के सम्पूर्ण क्षेत्र की सुरक्षा के स्रोत के रूप में समझते हैं** - जीवन, जो एक भेंट हैं, के संरक्षण से लेकर, विचार, विवेक, धर्म, विश्वास, राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रताओं से लेकर अभाव और भय से मुक्ति तक, जिसमें हिंसा के सभी स्वरूप शामिल हैं।

   - "जो कोई एक जीवन की रक्षा करता है, उसे पवित्रशास्त्र में ऐसा माना जाता है मानो उसने पूरी दुनिया को संरक्षित किया है।" (तलमूद, संहेद्रिन, 37, ए)।
   - "जो व्यक्ति किसी व्यक्ति की जान बचाता है, वह उस व्यक्ति के समान है जो सभी की जान बचाता है।" (कुरान 5:32)
   - "तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी ताकत और अपनी पूरी बुद्धि से प्यार करना; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करना।" (ल्यूक 10:27)
   - "उन्हें इस सदन के भगवान की पूजा करनी चाहिए जिन्होंने उन्हें भूख से बचाया और उन्हें डर से बचाया।" (सूरत क़ुरैश, आयत 3,4)
   - "मनुष्य को संसार में यह सिखाने के लिए बनाया गया है कि यदि कोई एक भी व्यक्ति को नाश करता है, तो उसने पूरे संसार को नष्ट कर दिया है; और यदि कोई एक भी जीवन बचाता है, तो उसने पूरे संसार को बचा लिया है।" (मिश्ना सैन्हेड्रिन 4:5)
   - "आइए हम एक साथ खड़े हों, सामूहिक रूप से वक्तव्य दें और हमारे विचार एक हों।" (ऋग्वेद 10:191:2)
   - "जिस प्रकार मैं स्वयं को अप्रिय चीजों से बचाता हूं, चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों, उसी प्रकार मुझे दूसरों के प्रति करुणामय और देखभालपूर्ण मन से व्यवहार करना चाहिए।" (शांतिदेव, बोधिसत्व जीवन पथ की मार्गदर्शिका)
   - "आइये हम सब मिलकर यह सोचें कि हम अपने बच्चों के लिए क्या जीवन बना सकते हैं।" (लकोटा (टेटन) के प्रमुख 'चीफ सिटिंग बुल, लकोटा')
3. उपरोक्त के आधार पर, आस्था के कई अन्य स्रोतों के अलावा, हम आश्वस्त हैं कि हमारी **धार्मिक या आस्था संबंधी मान्यताएँ सभी व्यक्तियों और समुदायों की मानवीय गरिमा और स्वतंत्रता की सुरक्षा के मूलभूत स्रोतों में से एक हैं**, जिसमें किसी भी आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। धार्मिक, नैतिक और दार्शनिक ग्रंथों ने मानव जाति की एकता, जीवन के अधिकार की पवित्रता और संबंधित व्यक्तिगत और सामूहिक कर्तव्यों को बनाए रखने में अंतर्राष्ट्रीय कानून से पहले काम किया है, जो विश्वासियों के दिलों में निहित हैं।
4. **हम उन साझा मानवीय मूल्यों का प्रसार करने की प्रतिज्ञा करते हैं जो हमें एकजुट करते हैं**। हालाँकि हम कुछ धार्मिक प्रश्नों पर भिन्न हैं, फिर भी हम हिंसा, भेदभाव और धार्मिक घृणा को बढ़ावा देने के लिए ऐसे मतभेदों का किसी भी तरह से शोषण करने का विरोध करने का वचन देते हैं।
   - "हमने विभिन्न समूहों के लिए एक कानून और एक प्रथा तैयार की है। यदि अल्लाह चाहते, तो वह आप सभी को एक ही समुदाय बना देते। किन्तु उन्होंने यह चाहा कि जो मार्गदर्शन

आपको प्रदान किया गया है, उसके माध्यम से वह आपकी परीक्षा लें। अतः आप भलाई के कार्यों में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करें। अंततः आप सबको अल्लाह की ओर लौटना है, और वह आपको उन सभी बातों की सच्चाई बता देंगे, जिनमें आप परस्पर मतभेद करते रहे हैं।" (कुरान 5, 48)

- "तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा के पत्ते हो।" (बहाउल्लाह)

5. हमारा मानना है कि धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता **विचार और विवेक की स्वतंत्रता के बिना मौजूद नहीं है** जो सभी स्वतंत्रताओं से पहले है क्योंकि वे मानव सार और व्यक्ति के चुनाव के अधिकार और धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता से जुड़े हुए हैं। एक व्यक्ति समग्र रूप से हर विश्वास का आधार है और वह व्यक्ति प्रेम, क्षमा और सम्मान के माध्यम से बढ़ता है।
6. हम बेरूत से अपने अहंकार, स्वार्थ और कृत्रिम विभाजन **के खिलाफ़ सबसे महान, शांतिपूर्ण लेकिन शक्तिशाली संघर्ष की शुरुआत कर रहे हैं**। जब हम धार्मिक अभिनेता के रूप में अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभाते हैं, अपनी ज़िम्मेदारियों के बारे में साझा दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं और उपदेशों से आगे बढ़कर काम करते हैं, तभी हम विभिन्न धर्मों या विश्वासों के लोगों के बीच आपसी स्वीकृति और भाईचारे को मज़बूती से बढ़ावा दे पाएँगे और उन्हें नफ़रत, दुष्टता, चालाकी, लालच, क्रूरता और अमानवीयता के संबंधित रूपों के नकारात्मक आवेगों को हराने के लिए सशक्त बना पाएँगे। सभी धार्मिक या विश्वास समुदायों को एक दृढ़ नेतृत्व की आवश्यकता है जो स्पष्ट रूप से सभी की समान गरिमा के लिए काम करके उस रास्ते पर चले, जो हमारी साझा मानवता और हर इंसान की अंतरात्मा की पूर्ण स्वतंत्रता के सम्मान से प्रेरित हो। हम "अधिकारों के लिए विश्वास" (F4R) गतिविधियों के माध्यम से स्वतंत्रता और विविधता की रक्षा करके उस संयुक्त नेतृत्व अंतर को भरने में कोई कसर नहीं छोड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं।

   - "हमने प्रत्येक **व्यक्ति** को गलत काम करने की उसकी अंतर्निहित कमज़ोरी और सही काम करने की उसकी आकांक्षा के भीतर परिपूर्ण किया है। सफल वही होता है जो सही मार्ग पर आगे बढ़ता है।" (कुरान 91, 7-9)

7. **"अधिकारों के लिए आस्था" पर वर्तमान घोषणापत्र दुनिया के सभी क्षेत्रों में धर्मों और विश्वासों से संबंधित व्यक्तियों तक पहुँचता है**, जिसका उद्देश्य सभी संबंधित पक्षों द्वारा सहमत एक आम कार्रवाई-उन्मुख मंच के आधार पर एकजुट, शांतिपूर्ण और सम्मानजनक समाजों को बढ़ाना है और सभी अभिनेताओं के लिए खुला है जो इसके उद्देश्यों को साझा करते हैं। हम मानते हैं कि अधिकारों के लिए आस्था पर हमारी घोषणापत्र, भेदभाव, शत्रुता या हिंसा को बढ़ावा देने पर रबात कार्य योजना (अक्टूबर 2012) की तरह, दुनिया के सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान और समर्थन के तहत तैयार और संचालित की गई थी, और विशेष प्रतिवेदकों और संधि निकाय के सदस्यों जैसे संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार तंत्रों द्वारा समृद्ध थी।
8. जबकि समय के साथ दोनों के लाभ के लिए आस्था को अधिकारों से जोड़ने के लिए कई स्वागत योग्य पहल की गई, इनमें से कोई भी प्रयास उस लक्ष्य तक पूरी तरह नहीं पहुंच पाया। इसलिए हम आश्वस्त हैं कि **धार्मिक अभिनेताओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर**, नफरत को बढ़ावा देने वालों, समाज को अस्थिर करने से लाभ उठाने वालों और समान और अविभाज्य मानवीय गरिमा को नुकसान पहुंचाने वाले भय के हेरफेर करने वालों के खिलाफ हमारी साझा मानवता की रक्षा करने में अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम होना चाहिए। वर्तमान F4R घोषणा के साथ, हमारा उद्देश्य हम सभी के बीच आम आधारों को स्पष्ट करके आस्था और अधिकारों को करीब लाने के पिछले प्रयासों को आगे बढ़ाने में **हाथ मिलाना और उन तरीकों को परिभाषित करना है जिनसे आस्था अधिक प्रभावी ढंग से अधिकारों के लिए खड़ी हो सकती है** ताकि दोनों एक-दूसरे को बढ़ा सकें।
   - "मानव जाति घाटे में है। सिवाय उन लोगों के जो नेक काम करने में विश्वास रखते हैं, एक दूसरे को हमेशा इसी बात की सलाह देते हैं और उसी पर कायम रहते हैं।" (कुरान 103, 3)
9. वर्तमान घोषणापत्र के आधार पर, हम एक बहु-स्तरीय गठबंधन स्थापित करके जो हम कहते हैं उसका पालन करने का भी इरादा रखते हैं, जो सभी स्वतंत्र धार्मिक अभिनेताओं और आस्था-आधारित संगठनों के लिए खुला है, जो वास्तविक रूप से वर्तमान F4R घोषणापत्र की स्वीकृति और प्रतिबद्धता को उन क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर परियोजनाओं को लागू करके प्रदर्शित करते हैं जो इसके उद्देश्य को प्राप्त करने में योगदान करते हैं। हम

विशिष्ट क्षेत्रों में ठोस कार्रवाई के लिए एक रोडमैप भी तैयार करेंगे, जिसकी नियमित रूप से हमारे आस्था के लिए अधिकारों के वैश्विक गठबंधन द्वारा समीक्षा की जाएगी।

10. उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हम विश्वासियों (चाहे आस्तिक, अनीश्वरवादी, नास्तिक या अन्य[iii]) के रूप में **पाँच मूलभूत सिद्धांतों** का पूर्णतः पालन करने की प्रतिज्ञा करते हैं:
    - स्थानीय स्तर पर पारंपरिक अंतर-धार्मिक संवादों को **ठोस कार्रवाई-उन्मुख आस्था के लिए अधिकार (F4R) परियोजनाओं में बदलना।** जबकि संवाद महत्वपूर्ण है, यह अपने आप में एक लक्ष्य नहीं है। उचित कार्रवाई के बिना अच्छे इरादों का मूल्य सीमित है। मूलभूत स्तर पर बदलाव हमारा लक्ष्य है और ठोस कार्रवाई इसका तार्किक साधन है।
        - "विश्वास दिल में तब स्थापित होता है जब वह कर्मों से प्रदर्शित होता है।" (हदीथ)
    - वर्तमान F4R घोषणा में परिभाषित साझा अंतर-विश्वास और अंतर-विश्वास दृष्टि के क्षेत्रों पर कार्य **करने के लिए धार्मिक और सैद्धांतिक विभाजन से बचना**। इस घोषणा को धर्मों के बीच संवाद के लिए एक उपकरण के रूप में नहीं बल्कि सभी के लिए मानवीय गरिमा की रक्षा में आम कार्रवाई के लिए एक संयुक्त मंच के रूप में माना जाता है। जबकि हम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान करते हैं और धार्मिक प्रवचन के विभिन्न स्तरों पर विवाद के स्तर की निरंतरता के बारे में कोई भ्रम नहीं रखते हैं, हम राजनीति और संघर्ष दोनों में धर्मों के हेरफेर को चुनौती देने के लिए दृढ़ हैं। हम जमीनी स्तर पर एकजुटता, तर्क, करुणा, संयम, ज्ञान और इसी तरह की सामूहिक कार्रवाई की एक संतुलित एकजुट आवाज़ बनने का इरादा रखते हैं।
    - **आत्मनिरीक्षण** एक ऐसा गुण है जिसे हम संजोकर रखते हैं। हम सभी अपनी-अपनी कमज़ोरियों और अपने-अपने समुदायों में चुनौतियों के बारे में सबसे पहले बोलेंगे और कार्रवाई करेंगे। हम आंतरिक और समावेशी विचार-विमर्श के बाद सामूहिक रूप से और लगातार अधिक वैश्विक मुद्दों को संबोधित करेंगे, जो हमारी सबसे कीमती ताकत यानी अखंडता को बनाए रखेगा।
    - **एक स्वर में बोलते हुए**, विशेष रूप से किसी भी प्रकार की घृणा की वकालत के खिलाफ जो हिंसा, भेदभाव या किसी अन्य प्रकार से सभी मनुष्यों के समान सम्मान का उल्लंघन करती है, चाहे उनका धर्म, विश्वास, लिंग, राजनीतिक या अन्य राय, राष्ट्रीय या सामाजिक मूल या कोई अन्य स्थिति कुछ भी हो। घृणा, अन्याय, धार्मिक आधार पर भेदभाव या किसी भी प्रकार की धार्मिक असहिष्णुता को बढ़ावा देने की निंदा करना पर्याप्त नहीं है। हमारा कर्तव्य है कि हम घृणास्पद भाषण का निवारण उपचारात्मक करुणा और एकजुटता के साथ करें जो दिलों और समाजों को समान रूप से ठीक करे। निवारण के हमारे शब्द धार्मिक या विश्वास की सीमाओं से परे होने चाहिए। इस प्रकार ऐसी सीमाएं अब जोड़-तोड़ करने वालों, ज़ेनोफोब, लोकलुभावन और हिंसक चरमपंथियों के लिए एक स्वतंत्र भूमि नहीं रहनी चाहिए।
    - **हम पूरी तरह से स्वतंत्र तरीके से कार्य करने के लिए संकल्पित हैं**, केवल अपनी अंतरात्मा की आवाज पर चलते हुए, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों, प्रासंगिक सरकारी निकायों और गैर-राज्य अभिनेताओं के साथ साझेदारी की मांग करते हुए, जहाँ भी वर्तमान घोषणा के अनुरूप विश्वास के लिए अधिकार (F4R) गठबंधन स्वतंत्र रूप से स्थापित हैं।

11. हमारा मुख्य साधन और परिसंपत्ति इस F4R घोषणा में निहित हमारे साझा विश्वासों को व्यक्त करने के **लिए निवारक संरचित तरीके से सैकड़ों मिलियन विश्वासियों तक पहुंचना है**। मानवता के लिए आम चुनौतियों के मुद्दों पर सभी की समान गरिमा की रक्षा में एक स्वर में बोलना समान रूप से विश्वास और अधिकारों के कारण की सेवा करता है। मनुष्य को केवल सहिष्णुता के बजाय पूर्ण और समान सम्मान का अधिकार है, चाहे वे क्या मानते हों या नहीं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी-अपनी क्षमता के क्षेत्रों में इस प्रतिबद्धता को बनाए रखें। हम सभी विश्वासियों को उनके धर्म या विश्वास की परवाह किए बिना जरूरतमंदों और वंचितों के प्रति न्याय, समानता और जिम्मेदारी के अपने गहरे मूल्यों की रक्षा में अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को संभालने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
    - “लोग या तो आस्था में आपके भाई हैं, या मानवता में आपके भाई हैं।” (इमाम अली इब्न अबी तालिब)
    - “मानव जीवन की लंबी यात्रा में, आस्था सबसे अच्छा साथी है।” (बुद्ध)

12. हमारा लक्ष्य उस लक्ष्य को ठोस तरीके से प्राप्त करना है जो दुनिया के सभी हिस्सों में **जमीनी स्तर पर लोगों** के लिए मायने रखता है, जहाँ धार्मिक अभिनेताओं के गठबंधन इस घोषणा का पालन करना चुनते हैं और उसके अनुसार कार्य करते हैं। हम एक-दूसरे के कार्यों का समर्थन करेंगे, जिसमें दुनिया के सभी हिस्सों में हर 10 दिसंबर को विविधता में हमारी एकता की सबसे समृद्ध अभिव्यक्ति में अधिकारों के लिए एक अत्यधिक प्रतीकात्मक वार्षिक वॉक ऑफ फेथ शामिल है।
13. वर्तमान घोषणा के माध्यम से 2012 की रबात कार्य योजना और अनुवर्ती बैठकों के आधार पर धार्मिक अभिनेताओं के एक साझा दृष्टिकोण को व्यक्त करना, **अंधकार की शक्तियों को निरस्त्र करने के लिए महत्वपूर्ण बिंदु प्रदान करेगा**; और डर और घृणा के बीच बहुत से दिलों में अपवित्र गठबंधन को खत्म करने में मदद करेगा। धर्म के नाम पर हिंसा इसकी मूल नींव, दया और करुणा को पराजित करती है। हम स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तरों पर अंतर-सामुदायिक सामाजिक, विकासात्मक और पर्यावरणीय आस्था-आधारित परियोजनाओं के माध्यम से दया और करुणा के संदेशों को एकजुटता के कार्यों में बदलने का इरादा रखते हैं।
14. हम अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दस्तावेजों में व्यक्त **सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त मूल्यों** को हमारी साझा मानवता के सामान्य मानकों के रूप में पूरी तरह से अपनाते हैं। हम इस F4R घोषणा में अपनी प्रतिबद्धताओं को सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अपने इस विश्वास पर आधारित करते हैं कि धर्म और विश्वास मानव सम्मान, न्याय और निष्पक्षता के सम्मान के सामान्य मूल मूल्यों को साझा करते हैं। हम इन प्रतिबद्धताओं को इस तथ्य ज़मीन की हमारी स्वीकृति पर भी आधारित करते हैं कि "**हर किसी का उस समुदाय के प्रति कर्तव्य है** जिसमें अकेले उसके व्यक्तित्व का स्वतंत्र और पूर्ण विकास संभव है।"[iv] हमारा कर्तव्य है कि हम जो उपदेश देते हैं, उसका पालन करें, पूरी तरह से जुड़ें, बोलें और मानवीय गरिमा की रक्षा के लिए आधारिक स्तर पर काम करें, इससे पहले कि यह वास्तव में ख़तरे में पड़ जाए।
    - ऐ ईमान वालों, तुम जो उपदेश देते हो, उसका पालन क्यों नहीं करते? अल्लाह के निकट यह बहुत ही नापसंदीदा है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं।" (कुरान 61: 2-3)
    - उन लोगों के लिए बोलो जो खुद के लिए नहीं बोल सकते, उन सभी के अधिकारों के लिए जो बेसहारा हैं। बोलो और निष्पक्ष रूप से न्याय करो; गरीबों और ज़रूरतमंदों के अधिकारों की रक्षा करो। (नीतिवचन 31:8-9)
15. **धार्मिक उपदेश और मौजूदा अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढांचे** दोनों ही धार्मिक अभिनेताओं को जिम्मेदारियाँ सौंपते हैं। धार्मिक अभिनेताओं को सशक्त बनाने के लिए कानून, संस्थागत सुधार, सहायक सार्वजनिक नीतियाँ और स्थानीय धार्मिक अभिनेताओं की ज़रूरतों के अनुकूल प्रशिक्षण जैसे क्षेत्रों में कार्रवाई की आवश्यकता होती है, जो अक्सर अपने संबंधित कार्य क्षेत्रों में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के मुख्य स्रोतों में से एक होते हैं। अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और अनुबंधों ने नरसंहार, शरणार्थी, धार्मिक भेदभाव और धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता जैसे प्रमुख कानूनी शब्दों को परिभाषित किया है।[v] इन सभी अवधारणाओं की अलग-अलग धर्मों और मान्यताओं में समान प्रतिध्वनि है। इसके अलावा, कई घोषणाएँ और संकल्प धार्मिक अभिनेताओं[vi] की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के तत्व प्रदान करते हैं जिन्हें हम इस F4R घोषणा में अपनाते हैं और समेकित करते हैं।
16. **हम मनुष्य होने के नाते इस बात से सहमत हैं कि हम सभी मनुष्यों के प्रति जवाबदेह हैं** कि धर्मों को जिस तरह से चित्रित किया जाता है और अक्सर उसमें चालाकी की जाती है, उसे सुधारा जाए। हम अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन अगर हम सही तरीके से और समय पर काम नहीं करते हैं तो हम और भी ज़्यादा जिम्मेदार हैं।
    - "हम आपमें से हर एक से पूछेंगे कि आपने क्या कहा और क्या किया है, क्योंकि आप जवाबदेह हैं" (कुरान, अस्साफ़ात, 24)
    - "प्रत्येक व्यक्ति का कार्य स्पष्ट रूप से सामने लाया जाएगा।" (बाइबिल, 1 कुरिन्थियों iii. 13)
17. जबकि राज्यों की प्राथमिक जिम्मेदारी सभी के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से भय और अभाव से मुक्त एक सम्मानजनक जीवन का आनंद लेने और जीवन के सभी पहलुओं में चुनाव की स्वतंत्रता का आनंद लेने के सभी अधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने की है, हम धार्मिक कार्यकर्ताओं या व्यक्तिगत विश्वासियों के रूप में अपने उपदेशों, शिक्षण, आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सामाजिक जुड़ाव के अपने क्षेत्रों में सभी परिस्थितियों में **हमारी साझा मानवता और प्रत्येक मानव की समान गरिमा के लिए खड़े होने की एक अलग जिम्मेदारी** है।

- "जो कोई अन्याय या गलत काम को देखता है, उसे अपने हाथों से उसका मार्ग बदल देना चाहिए। अगर वह ऐसा नहीं कर सकता, तो उसे अपने शब्दों से ऐसा करना चाहिए। अगर वह ऐसा करने में असमर्थ है, तो उसे अपने दिलों से ऐसा करना चाहिए। यह ईमान का सबसे कमज़ोर काम होगा" (हदीस)

18. **धार्मिक समुदायों, उनके नेताओं और अनुयायियों** की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कानूनी साधनों के तहत सार्वजनिक प्राधिकरणों से स्वतंत्र रूप से भूमिका और जिम्मेदारियाँ होती हैं। धर्म या विश्वास के आधार पर सभी प्रकार की असहिष्णुता और भेदभाव के उन्मूलन के संबंध में 1981 का संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र के अनुच्छेद 2 (1) के अनुसार, "किसी भी व्यक्ति को किसी भी राज्य, संस्था, व्यक्तियों के समूह या व्यक्ति द्वारा धर्म या विश्वास के आधार पर भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ेगा"। यह प्रावधान धार्मिक संस्थाओं, नेताओं और यहाँ तक कि धार्मिक या विश्वास समुदायों के भीतर प्रत्येक व्यक्ति की प्रत्यक्ष जिम्मेदारियाँ स्थापित करता है।
19. संघर्ष के समय में प्रभावी नियंत्रण की धारणा[vii] गैर-राज्यीय अभिनेताओं की जिम्मेदारियों के लिए आधार प्रदान करती है, हम धार्मिक नेताओं के मामले में भी इसी प्रकार का कानूनी और नैतिक औचित्य देखते हैं, जो **हर समय अपने अनुयायियों के दिलों और दिमागों पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं**।
20. भाषण व्यक्तिगत और सामुदायिक उत्कर्ष के लिए मौलिक है। **यह मानवता के अच्छे और बुरे पक्षों के लिए सबसे महत्वपूर्ण माध्यमों में से एक है**। युद्ध दिमाग में शुरू होता है और अक्सर नफरत की छिपी वकालत से प्रेरित तर्क द्वारा विकसित होता है। सकारात्मक भाषण दिलों और दिमागों में सामंजस्य और शांति निर्माण का उपचार उपकरण भी है। भाषण उन जिम्मेदारियों के सबसे रणनीतिक क्षेत्रों में से एक है जिन्हें हम रबात कार्य योजना द्वारा व्यक्त की गई सीमाओं के आधार पर इस F4R घोषणा के माध्यम से उनके कार्यान्वयन के लिए एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
21. नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदा (अनुच्छेद 20, पैराग्राफ 2) के तहत, राज्य राष्ट्रीय, नस्लीय या धार्मिक घृणा की किसी भी वकालत को प्रतिबंधित करने के लिए बाध्य हैं जो भेदभाव, शत्रुता या हिंसा को बढ़ावा देती है। **इसमें धर्म के नाम पर कुछ धार्मिक नेताओं द्वारा घृणा को बढ़ावा देना शामिल है।** वक्ता की स्थिति, संदर्भ, विषय-वस्तु और उपदेशों की सीमा के कारण, धार्मिक नेताओं द्वारा दिए गए ऐसे बयान घृणा को बढ़ावा देने की सीमा को पूरा कर सकते हैं। इस तरह के उकसावे को रोकना पर्याप्त नहीं है। सुलह के लिए उपचारात्मक वकालत भी समान रूप से एक कर्तव्य है, जिसमें धार्मिक नेता भी शामिल हैं, खासकर जब धर्म या विश्वास के नाम पर घृणा की वकालत की जाती है।
22. इस क्षेत्र में सबसे स्पष्ट और नवीनतम मार्गदर्शन 2012 रबात कार्य योजना[viii] द्वारा प्रदान किया गया है, **जो धार्मिक नेताओं की तीन विशिष्ट प्रमुख जिम्मेदारियों को स्पष्ट करता है**: (क) धार्मिक नेताओं को असहिष्णुता के संदेशों या ऐसी अभिव्यक्तियों का उपयोग करने से बचना चाहिए जो हिंसा, शत्रुता या भेदभाव को भड़का सकती हैं; (ख) धार्मिक नेताओं को असहिष्णुता, भेदभावपूर्ण रूढ़िवादिता और घृणास्पद भाषण के उदाहरणों के खिलाफ दृढ़ता से और तुरंत बोलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है; और (ग) धार्मिक नेताओं को यह स्पष्ट होना चाहिए कि घृणा भड़काने की प्रतिक्रिया के रूप में हिंसा को कभी भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है (उदाहरण के लिए हिंसा को पूर्व उकसावे से उचित नहीं ठहराया जा सकता है)।

www.ohchr.org/EN/Issues/FreedomReligion/Pages/FaithForRights.aspx

---

[i] धार्मिक या विश्वास ग्रंथों से सभी उद्धरण बेरूत कार्यशाला के प्रतिभागियों द्वारा अपने स्वयं के धर्म या विश्वास के संबंध में पेश किए गए थे और केवल उदाहरण और गैर-संपूर्ण होने का इरादा है।

[ii] ओएचसीएचआर ने जिनेवा (अक्टूबर 2008), वियना (फरवरी 2011), नैरोबी (अप्रैल 2011), बैंकॉक (जुलाई 2011), सैंटियागो डे चिली (अक्टूबर

[iii] देखें संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार समिति, सामान्य टिप्पणी संख्या 22 (1993), संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज़ CCPR/C/21/Rev.1/Add.4, पैरा।

[iv] मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948) का अनुच्छेद 29, पैराग्राफ 1।

[v] इनमें नरसंहार के अपराध की रोकथाम और सजा पर कन्वेंशन (1948); शरणार्थियों की स्थिति से संबंधित कन्वेंशन (1951); नस्लीय भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1965); नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध (1966); आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध (1966); महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन (1979); यातना और अन्य क्रूर, अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या सजा के खिलाफ कन्वेंशन (अपमानजनक 1984);

बाल अधिकारों पर कन्वेंशन (1989); सभी प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों के सदस्यों के अधिकारों के संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1990); विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (2006); और जबरन गुमशुदगी से सभी व्यक्तियों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (2006)।

[vi] इनमें मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948); धर्म या विश्वास के आधार पर असहिष्णुता और भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर घोषणा (1981); राष्ट्रीय या जातीय, धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों से संबंधित व्यक्तियों के अधिकारों पर घोषणा (1992); आपदा प्रतिक्रिया कार्यक्रमों में अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस और रेड क्रीसेंट मूवमेंट और गैर सरकारी संगठनों के लिए आचरण के सिद्धांत (1994); सहिष्णुता के सिद्धांतों पर यूनेस्को घोषणा (1995); धर्म या विश्वास, सहिष्णुता और गैर-भेदभाव की स्वतंत्रता के संबंध में स्कूली शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार सम्मेलन का अंतिम दस्तावेज (2001); पब्लिक स्कूलों में धर्मों और विश्वासों के बारे में शिक्षण पर टोलेडो मार्गदर्शक सिद्धांत (2007); स्वदेशी लोगों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र घोषणा (2007); "मानव अधिकारों में विश्वास" पर हेग वक्तव्य (2008); अभिव्यक्ति और समानता की स्वतंत्रता पर कैमडेन सिद्धांत (2009); मानवाधिकार परिषद का संकल्प 16/18 धर्म या विश्वास के आधार पर व्यक्तियों के खिलाफ असहिष्णुता, नकारात्मक रूढ़िवादिता और कलंक, और भेदभाव, हिंसा और हिंसा के लिए उकसाने पर (और इस्तांबुल प्रक्रिया, 2011); राष्ट्रीय, नस्लीय या धार्मिक घृणा की वकालत के निषेध पर रबात कार्य योजना जो भेदभाव, शत्रुता या हिंसा के लिए उकसाती है (2012); अत्याचार अपराधों के लिए विश्लेषण की रूपरेखा (2014); हिंसक चरमपंथ को रोकने के लिए महासचिव की कार्य योजना (2015); साथ ही हिंसा के लिए उकसाने को रोकने पर Fez घोषणा जो अत्याचार अपराधों (2015) को जन्म दे सकती है।

[vii] कुछ परिस्थितियों में, विशेष रूप से जब गैर-राज्य अभिनेता क्षेत्र और आबादी (जैसे वास्तविक अधिकारियों के रूप में) पर महत्वपूर्ण/प्रभावी नियंत्रण का प्रयोग *करते* हैं, तो वे कर्तव्य वाहक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों का सम्मान करने के लिए भी बाध्य होते हैं (देखें संयुक्त राष्ट्र डॉक्स। CEDAW/C/GC/30, जरा 16; ए/एचआरसी/28/66, पैरा 54-55)।

[viii] देखें संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज़ A/HRC/22/17/Add.4, अनुलग्नक, परिशिष्ट, पैरा 36.